देश के लिए सर्वस्व समर्पित कर दिया बाबूजी ने

अमर उजाला ब्यूरो 1999
करनाल, 21 अगस्त

हरियाणा के गांधी व महान स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय बाबू मूलचंद जैन आरंभ से ही क्रांतिकारी विचारों के थे। गांधी जी के विचारों से ओतप्रोत व जैन धर्मशास्त्रों का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव होने के कारण उन्हें छूआछूत से भारी नफरत ही नहीं थी, बल्कि वे छुआछूत करने वाले व्यक्तियों से दूर ही रहते थे। यही कारण था कि कॉलेज शिक्षा के दौरान ही इन्होंने महसूस किया कि गांव के उच्च वर्ग द्वारा हरिजनों का उच्च वर्ग के कुंए से पानी न भरने देना हरिजनों के साथ अन्याय है। इस बात से तो बाबू जी का खून खौल उठा और बाबू जी ने गांव के हरिजनों को उच्च वर्ग के कुंए से पानी भरने के लिए प्रेरित ही नहीं किया बल्कि उच्च वर्ग के विरोध के बावजूद कुंए से पानी भरवा कर ही दम लिया।

बाबू मूलचंद जैन का जन्म 20 अगस्त 1915 को ग्राम सिकंदरपुर माजरा, तहसील गोहाना, जिला सोनीपत में एक जैन परिवार में हुआ था। बाबूजी का परिवार निम्न मध्यम वर्ग से संबधित था। इनके पिता जी दुकानदारी का काम करते थे। अन्य परिवारों की तरह इनका घर भी कच्चा ही था। बाबू जी ने गांव के स्कूल से ही सन 1925 में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की, मैट्रिक की परीक्षा सन 1931 में गोहाना के हाई स्कूल से पास की और प्रथम स्थान प्राप्त किया। उसी वर्ष मार्च में सरदार भगत सिंह, सुखदेव सिह और राजगुरु को फांसी दे दी गई। इसके विरोध में सारे देश में कोहराम मच गया।

गोहाना में भी इसके विरोध में जलसे, जुलूस हुए और यह बालक भी इसमे शामिल हुआ। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के बावजूद स्कूल में प्रथम आने के कारण माता-पिता ने इन्हें रोहतक कॉलेज में दाखिल करवा दिया। इसके बाद सन 1935 में बाबू जी ने लाहौर से बी.ए. की परीक्षा पास की। लाहौर में कॉलेज का खर्च चलाने के लिए बाबू जी ट्यूशन पढ़ाने का कार्य करते थे। बाबू जी को सारे पंजाब में फर्स्ट आने पर गोल्ड मेडल मिला। सन 1937 में रोहतक जिले के असौंधा गांव में कांग्रेस की एक सभा में जमींदार लीग के लगभग एक हजार कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर हमला बोल दिया। सैंकड़ों कार्यकर्ता बुरी तरह घायल हुए। श्री जैन को भी लाठियों और गंड़ासों से चोटें आई और वे लहूलुहान हो कर बेहोश हो गए। इन्हें बहादुरगढ़ के अस्पताल में ले जाया गया, जहां कई दिनों की चिकित्सा के बाद वे ठीक हुए और घर वापस आ गए। सन 1940 में गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन छेड़ दिया। श्री जैन भी इस सत्याग्रह में शामिल हो गए और छह मार्च 1941 को श्री जैन ने अपनी जन्मभूमि ग्राम सिकंदपुर माजरा में ही सत्याग्रह शुरु कर दिया। गांव की चौपाल में गांव और आसपास के गांवों के काफी लोग एकत्रित हो गए। महिलाएं भी बड़ी संख्या में उपस्थित थी। श्री जैन ने डी.सी. रोहतक को इस आंदोलन के बारे में पहले ही नोटिस दे दिया था कि वे अपने गांव में छह मार्च को एक बजे युद्ध में भाग लेने के विरुद्ध जनता को संबोधित करेंगे। इसलिए पुलिस भी काफी संख्या में आई हुई थी। अन्य साथियों के भाषण के पश्चात जैसे ही श्री जैन ने भाषण देना आरंभ किया, वैसे ही पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार करके रोहतक जेल भेज दिया। मजिस्ट्रेट ने उन्हें भारत सुरक्षा अधिनियम का उल्लंधन करने के आरोप में एक साल की सजा दी और गुजरात जेल (पाकिस्तान) भेज दिया।

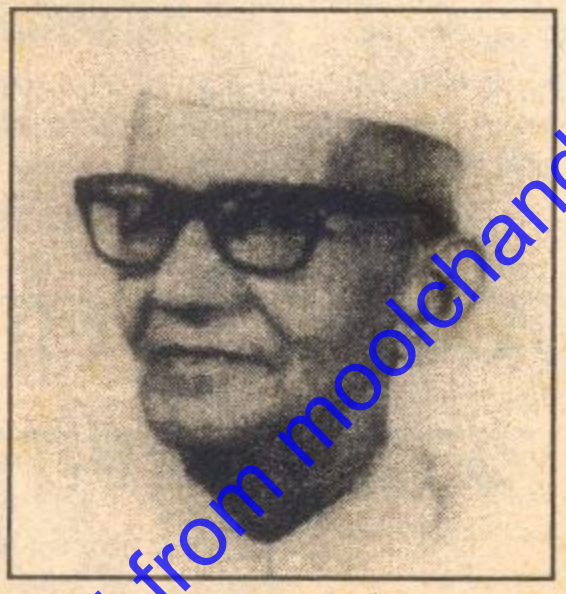

बाबू मूलचंद जैन

हरियाणा के गांधी बाबू मूलचंद जैन

सन 1942 में गांधी जी द्वारा छेड़े गए भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने के कारण बाबूजी को 11 अगस्त 1942 को उन्हें करनाल कचहरी में गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर मुकदमा नहीं चलाया बल्कि नजरबंद किया गया और उन्हें करनाल जेल से मुलतान सेंट्रल जेल भेज दिया गया। जेल में जेल के नियमों का पालन न करने पर बाबूजी को एक सप्ताह कैद 'तन्हाई' की सजा सुनाई गई।

आखिर 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हो गया। बाबू जी ने करनाल कचहरी में वकालत आरंभ कर दी। बाबू जी गरीबों की वकालत मुफ्त में ही करते थे। बाबू जी एक साप्ताहिक समाचार पत्र 'बलिदान'का भी संपादन करते थे। जिसमें बाबू जी पुराने मुजारों के बारे काफी कुछ लिखते थे। बलिदान में मुजारों के बारे में लिखने का असर यह हुआ कि मुजारों को पांच-पांच एकड़ जमीन के मालिकाना हक मिल गए।

सन 1952 में भारत का पहला चुनाव हुआ। बाबू जी समालखा विधान सभा क्षेत्र से कांग्रेस टिकट पर चुनाव लड़कर विधायक बने व 1956 में इन्हें सरदार प्रताप सिंह कैरों मंत्रीमंडल में लोक निर्माण विभाग व अधिकारी व कराधीन विभाग का मंत्री बनाया गया। सन 1957 में बाबू जी ने कांग्रेस उच्च कमान के आदेश पर कैथल लोकसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ा और विजय श्री हासिल की। सन 1961 में बाबू जी ने घरौंडा से कांग्रेस टिकट पर चुनाव लड़ा, परंतु प्रताप सिंह कैरों की अंदरुनी खिलाफत के कारण चुनाव हार गए। सन 1967 में बाबू जी ने फिर घरौंडा से ही कांग्रेस टिकट पर विधान सभा चुनाव लड़ा और जीते। पंडित भगवन दयाल से विरोध होने के कारण उनके मंत्रीमंडल में शामिल नहीं हुए। इसके बाद राव विरेंद्र सिंह मुख्यमंत्री बने और बाबू जी उनके मंत्रीमंडल में वित्त मंत्री बने। यह गैर कांग्रेस सरकार थी।

जून 1975 में इंदिरा गांधी ने सारे देश में आपातकाल की घोषणा कर दी और सभी विरोधी नेताओं को जेल में ठूंस दिया। बाबू जी को भी गिरफ्तार कर लिया गया। कुछ दिन करनाल जेल में रखने के बाद इन्हें गुड़गांव में रखा गया। जहां से 19 महीने से अधिक समय के बाद 31 जनवरी 1977 को रिहा हुए। इसके तीन महीने बाद जून 1977 में हरियाणा विधान सभा के चुनाव हुए। बाबू जी समालखा विधानसभा क्षेत्र से जनता पार्टी के टिकट पर विधायक चुने गए। 1979 में देवीलाल मंत्रीमंडल में इन्हें शामिल कर लिया गया। नौ महीने बाद ही देवीलाल की सरकार टूट गई और बाबू जी लोकदल विधायक दल के नेता चुन लिये गए। 1982 तक बराबर विपक्ष में नेता रहे। 1982 का विधानसभा चुनाव समालखा से हार गए। सन 1985 में राजीव लोंगोवाल समझौते में पानी के बंटवारे व चंडीगढ़ को लेकर हरियाणा की अनदेखी होने पर बाबू जी ने चौधरी देवीलाल के साथ भारी संघर्ष किया।

सन 1987 में हरियाणा विधान सभा के चुनाव हुए, जिसमें चौधरी देवी लाल मुख्यमंत्री बने। चौधरी देवीलाल ने उन्हें राज्य योजना बोर्ड का उपाध्यक्ष बनाया। दो-ढाई साल के बाद देवीलाल से मतभेद होने के कारण बाबू जी ने उपाध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया। फरवरी 1990 में महम उपचुनाव में आंनद सिंह डांगी को खुला समर्थन दिया। इस उपचुनाव में आंनद सिंह डांगी बाबू जी की सलाह पर ही कार्य करते रहे।

1990 में ओमप्रकाश चौटाला से मतभेद होने के कारण उन्होंने जनता दल से त्यागपत्र भी दे दिया और लोकतंत्र विरोधी शक्तियों के खिलाफ सख्ती से खड़े हो गए। श्री जैन की रुचि नैतिक शिक्षा को बढ़ावा देने व पुस्तकालय आंदोलन में थी। इस कार्य को मूर्तरुप देने के लिये श्री जैन ने अपने पैतृक गांव में एक धर्मार्थ ट्रस्ट का गठन किया व अपनी पैतृक संपति व मकान ट्रस्ट के नाम कर दिया। 20 अगस्त 1991 को अपने जन्म दिवस पर पुस्तकालय का उद्घाटन किया, तभी से हर साल गांववासी श्री जैन का जन्म दिवस पुस्तकालय दिवस के रुप में मनाते आ रहे हैं। पिछले 20 अगस्त 1998 को गांव के राजकीय उच्च विद्यालय का नाम भी तत्कालीन शिक्षा मंत्री प्रोफेसर राम बिलास शर्मा ने बाबू मूलचंद जैन राजकीय उच्च विद्यालय रख दिया था व स्कूल में ही मुख्य द्वार के सामने बाबू जी की प्रतिमा भी स्थापित की गई थी।

Downloaded from moolchandjain.org